HIN3B18a_cours-08-2013-03-28-écrivaines-**Hindi**

हिन्दी की महिला उपन्यासकार और कहानीकार

(1) गौरा पंत '**शिवानी**' (जन्म - राजकोट, गुजरात, 17 अक्टूबर 1923; मृत्यु- दिल्ली, 21 मार्च 2003)। हिन्दी की सुप्रसिद्ध उपन्यासकार। हिंदी, संस्कृत, गुजराती, बंगाली, उर्दू तथा अंग्रेज़ी की अच्छी जानकारी। उनकी कृतियों में उत्तर भारत के कुमायूँ क्षेत्र के आसपास की लोक संस्कृति की झलक। महज 12 वर्ष की उम्र में पहली कहानी प्रकाशित हुई। निधन तक उनका लेखन निरंतर जारी रहा। उनकी अधिकतर कहानियाँ और उपन्यास नारी प्रधान रहे। अपने लेखन में उन्होंने नायिका के सौंदर्य और उसके चरित्र का वर्णन बड़े दिलचस्प अंदाज़ में किया है।

शिवानी के लेखन तथा व्यक्तित्व में उदारवादिता और परम्परानिष्ठता का जो अद्भुत मेल है, उसकी जड़ें, इनके विविधतापूर्ण जीवन में थीं। कहानी के क्षेत्र में पाठकों और लेखकों की रुचि निर्मित करने तथा कहानी को केंद्रीय विधा के रूप में विकसित करने का श्रेय शिवानी को जाता है। उनके लेखन में जिज्ञासा बनी रहती है। उन्होंने अपने समय के यथार्थ को बदलने की कोशिश नहीं की। उन्होंने संस्कृत निष्ठ हिंदी का इस्तेमाल किया। उपन्यास का कोई भी अंश लेखक को उसकी कहानी में पूरी तरह डुबो देता है।

(2) **कृष्णा सोबती** की मातृभाषा पंजाबी है, लेकिन इन्होंने हिन्दी में ही ज़्यादा लिखा है। उनके हिन्दी उपन्यास 'सूरजमुखी अँधेरे के' (1972) में नारी जीवन की मनोवैज्ञानिक समस्याओं को उभारा गया है। बलात्कार का शिकार होने से 'रत्ती' नाम की महिला पात्र असहिष्णु, क्रूर और फ्रिज़िड हो जाती। लेकिन दिवाकर के सम्पर्क में आने पर उसे फिर से नया जीवन मिल जाता है। इस प्रकार उसे अपनी कामविकृति से मुक्ति मिल जाती है। 'जिन्दगीनामा' (1979) - में पंजाब की जिंदगी का ब्यौरा दिया गया है। लेखिका ने इसमें पंजाब की संस्कृति, रहन-सहन, रीति-रिवाजों, दन्तकथाओं तथा प्रचलित लोकोक्तियों का बहुत ही दिलचस्प वर्णन प्रस्तुत किया है। 'दिलो-दानिश' (1993) एक अमीर वकील की दुहरी ज़िन्दगी की कहानी है। धनी परिवार में जन्मे एक हिन्दू वकील कृपानारायण शादीशुदा हैं फिर भी अपनी मुस्लिम मुवक्किल नमीस बानो की बेटी महकबानो पर फिदा हो जाते हैं। वे चोरी-छिपे महकबानो को एक अलग घर में रखते हैं। उनके इस गुप्त रिश्ते से एक बेटे बदरुद्दीन और एक बेटी मासूमा का जन्म होता है। जब मासूमा की शादी का वक्त आता है तो कृपानारायण उसे अपने असली घर लाना चाहते हैं ताकि शादी अपने घर से की जा सके। इस पर महकबानो नाराज होकर उससे अलग हो जाती है। लेकिन बेटी की शादी के दिन महकबानो मासूमा की माँ के रूप में भाग लेती हैं। यह सब वे कृपानारायण की इच्छा के खिलाफ़ करती हैं। कुल-मिलाकर इस उपन्यास में नारी-जीवन की व्यथा की कहानी है। समय सरगम (2000) - नामक उपन्यास में एक बूढ़ी महिला है जिसकी शादी नहीं हुई है और एक बूढ़ा है जिसकी पत्नी मर चुकी है। दोनों फिर से एक नया जीवन जीना, जीवन को पहचानना, जीवन को स्वीकारना चाहते हैं। कुल मिलाकर कहानी यही है। लेखिका के अनुसार संगीत की ही तरह ज़िन्दगी में भी सरगम के राग (उदात्त, अनुदात्त और त्वरित) होते हैं जिन्हें बनाए रखना ही ज़िन्दगी है।

(3) **मन्नू भंडारी** ने उपन्यास और कहानियाँ लिखी हैं। ये प्रसिद्ध हिन्दी लेखक राजेन्द्र यादव की पत्नी रहीं। इनके - आपका बंटी (1971) नामक उपन्यास में आज के समाज में तलाक की समस्या से जुड़े तमाम मुद्दों की चर्चा की गयी है। 'बंटी' अपने माता-पिता के तलाक के बाद मानसिक समस्याओं से ग्रस्त हो जाता है क्योंकि उसे अपने माता-पिता के नए जीवन-साथियों के साथ रह पाना मुश्किल लगता है। इस उपन्यास में बाल मनोविज्ञान का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। महाभोज (1979) एक राजनीतिक उपन्यास है। इस प्रकार इस उपन्यास का परिवेश वैयक्तिक या पारिवारिक न होकर सामाजिक है। इसमें दो मुख्यमंत्रियों की कहानी है। एक मुख्यमंत्री के पद पर है और दूसरा पहले मुख्यमंत्री के पद पर था। दोनों ही एक गरीब की हत्या का राजनीतिक लाभ उठाने के लिए तरह-तरह के षड़यन्त्र रचते हैं।

(4) **उषा प्रियंवदा** - ने उपन्यास और कहानियाँ लिखी हैं। उनके पहले उपन्यास 'पचपन खंभे लाल दीवारें' (1961) में आधुनिक नारी की मानसिक यंत्रणा का बहुत सजीव चित्रण है। 'रुकोगी नहीं राधिका' (1967) में नारी के इस संत्रास को दूसरे संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। अपने स्वतंत्र विकास के लिए पिता की इच्छा के खिलाफ 'राधिका' अमरीका जाकर 'डैन' से शादी कर लेती है लेकिन 'डैन' द्वारा छोड़ दिये जाने पर वह 'अक्षय' और 'मनीष' के बीच असुरक्षा की स्थिति में जीती है। 'शेषयात्रा' (1984) में 'अनु' 'प्रणव' से शादी करके अमरीका चली जाती है, लेकिन जल्दी ही उसे एहसास होता है कि 'प्रणव' के लिए वह मात्र उपभोग की सामग्री है। दोनों में तलाक की स्थिति पैदा हो जाती है। इस उपन्यास में भी आधुनिक नारी को केन्द्र में रखा गया है। इनके उपन्यासों में 'नयी कविता' के दौर की आधुनिकता के सारे तत्व, जैसे अकेलापन, संत्रास, ऊब, घुटन, अजनबीपन आदि, मिलते हैं।

(5) **मृदुला गर्ग** - मृदुला गर्ग (कोलकाता 25 अक्तूबर, 1938) हिंदी की सबसे लोकप्रिय लेखिकाओं में से एक हैं। उपन्यास, कहानी-संग्रह, नाटक तथा निबंध-संग्रह सब मिलाकर उन्होंने 20 से अधिक पुस्तकों की रचना की है। 1960 में अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि। 3 साल तक दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन। मृदुला गर्ग के लेखन में अभिजातवर्गीय नारी के स्वातंत्र्य, प्रेम-विवाह, वैवाहिक जीवन की एकरसता, ऊब, ताजगी की तलाश में पर पुरुष की ओर झुकाव तथा प्रेम की अनुभूति के विश्लेषण के जरिए मानव-जीवन की सार्थकता की तलाश देखने को मिलती है। उनका उपन्यास 'चितकोबरा' नारी-पुरुष के संबंधों में शरीर को मन के समांतर खड़ा करने और इस पर एक नारीवाद या पुरुष-प्रधानता विरोधी दृष्टिकोण रखने के लिए काफी चर्चित और विवादास्पद रहा था। उन्होंने 'इंडिया टुडे' के हिन्दी संस्करण में लगभग तीन साल तक 'कटाक्ष' नामक स्तंभ लिखा है जो अपने तीखे व्यंग्य के कारण खूब चर्चा में रहा। वे संयुक्त राज्य अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय में 1990 में आयोजित एक सम्मेलन में हिंदी साहित्य में महिलाओं के प्रति भेदभाव विषय पर व्याख्यान भी दे चुकी हैं। उनके प्रमुख उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' (1975), 'वंशज' (1976), 'चित्तकोबरा' (1979), 'अनित्य' (1980), 'मैं और मैं' (1984) तथा 'कठगुलाब' (1996) हैं। ग्यारह कहानी संग्रह- कितनी कैदें, टुकड़ा टुकड़ा आदमी, डैफ़ोडिल जल रहे हैं, ग्लेशियर से, उर्फ सैम, शहर के नाम, चर्चित कहानियाँ, समागम, मेरे देश की मिट्टी अहा, संगति विसंगति, जूते का जोड़ गोभी का तोड़, चार नाटक- एक और अजनबी, जादू का कालीन, तीन कैदें और

'सामदाम दंड भेद', दो निबंध संग्रह- निबंध संग्रह- रंग ढंग तथा चुकते नहीं सवाल, एक यात्रा संस्मरण- कुछ अटके कुछ भटके तथा एक व्यंग्य संग्रह 'कर लेंगे सब हज़म' प्रकाशित हुए हैं।

(6) **ममता कालिया** पारिवारिक जीवन-परिधि से बाहर व्यापक सामाजिक संदर्भ को भी महत्त्व देती हैं इस सदी के सातवें दशक में जब ममता कालिया ने लेखन आरंभ किया, कथा-कहानी में तब स्त्री की एक भीनी-भीनी छवि स्वीकृति और समर्थन के सुरक्षा-चक्र में दिखाई देती थी। व्यावसायिक पत्र-पत्रिकाएँ इस यथास्थितिवाद को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थीं। ममता कालिया ने अपने लेखन में रोज़मर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा और अपनी रचनाओं में रेखांकित किया कि स्त्री और पुरुष का संघर्ष अलग नहीं, कमतर भी नहीं। इसकी जगह समाजशास्त्रीय अर्थों में ज़्यादा विकट और महत्तर है। उनके अनुसार नारी की पवित्रता की कसौटी उसकी मानसिक एकात्मकता और समर्पण है, शारीरिक कुँआरापन नहीं।

2 नवंबर 1940 को वृंदावन में जन्मी ममता की शिक्षा दिल्ली, मुंबई, पुणे, नागपुर और इन्दौर शहरों में हुई। 'प्यार शब्द घिसते-घिसते चपटा हो गया है अब हमारी समझ में सहवास आता है' जैसी साहसी कविताओं से लेखन आरंभ कर ममता ने अपनी सामर्थ्य और मौलिकता का परिचय दिया और जल्द ही कथा-साहित्य की ओर मुड गईं। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में हाड़माँस की स्त्री का चेहरा दिखाया। जीवन की जटिलताओं के बीच जी रहे उनके पात्र एक निर्भय और श्रेष्ठतर सुलूक की माँग करते हैं जहाँ आक्रोश और भावुकता की जगह सत्य और संतुलन का आग्रह है। ममता कालिया की रचनाओं में उनके कहानी संग्रह 'छुटकारा', 'उसका यौवन', 'जाँच अभी जारी है', 'प्रतिदिन' और 'चर्चित कहानियाँ' उल्लेखनीय हैं। उनके प्रमुख उपन्यास हैं- 'बेघर' (1971), 'नरक दर नरक' (1975), 'प्रेम कहानी' (1980), एक पत्नी के नोट्स (1997)।

(7) **मेहरुन्निसा परवेज** के चार उपन्यास 'आँखों की दहलीज' (1969), 'उसका घर' (1972), 'कोरजा' (1977), 'अकेला पलाश' (1981) हैं। उपन्यासों का केन्द्रीय विषय निम्नमध्यवर्ग की नारी के जीवन की त्रासदी ही है। इन्होंने प्रेम, विवाह, तलाक, पतियों का निकम्मापन, अवैध सम्बन्ध, सास का अत्याचार, सौतेली माँ का अत्याचार, परित्यक्ता नारी का अकेलापन, नारी-जीवन की विवशताएँ आदि विषयों का अपने उपन्यासों में सजीव चित्रण किया है।

(8) **चित्रा मुद्गल** (10 दिसंबर 1944-) का जीवन किसी रोमांचक प्रेम-कथा से कम नहीं है। उन्नाव के जमींदार परिवार में जन्मी किसी लड़की के लिए साठ के दशक में अंतर्जातीय प्रेमविवाह करना आसान काम नहीं था। पिता का आलीशान बंगला छोड़कर 25 रुपए महीने के किराए की खोली में रहीं और मजदूर यूनियन के लिए काम किया। चित्रा ने हर चुनौती को हँसते-हँसते स्वीकार किया। पढ़ाई के दौरान श्रमिक नेता दत्ता सामंत के संपर्क में आकर श्रमिक आंदोलन से जुड़ीं। उन्हीं दिनों घरों में झाड़ू-पोंछा कर, उत्पीड़न और बदहाली में जीवन-यापन करने वाली बाइयों के उत्थान और बुनियादी अधिकारों की बहाली के लिए संघर्षरत संस्था 'जागरण' की बीस वर्ष की वय में सचिव बनीं। अपने लेखन में उन्होंने आज की व्यावसायिक उपभोगवादी संस्कृति में नारी-शोषण को सार्थक अभिव्यक्ति दी। 'एक जमीन अपनी' (1990), 'आवाँ' (1999) उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

(9) **मृणाल पांडे** (जन्म टीकमगढ़, मध्यप्रदेश, 1946-) भारत की एक पत्रकार, लेखक एवं भारतीय टेलीविजन की जानी-मानी हस्ती हैं। आजकल वे 'प्रसार भारती' की अध्यक्षा हैं। अगस्त 2009 तक वे हिन्दी दैनिक "हिन्दुस्तान" की सम्पादिका थीं। इसके अलावा वे लोकसभा चैनल के साप्ताहिक साक्षात्कार कार्यक्रम (बातों बातों में) का संचालन भी करती हैं। इनकी माँ जानी-मानी उपन्यासकार एवं लेखिका शिवानी थीं। 21 वर्ष की उम्र में उनकी पहली कहानी हिन्दी साप्ताहिक 'धर्मयुग' में छपी। तब से वे लगातार लेखन कर रही हैं। समाज सेवा में उनकी गहरी रूचि रही है। वे कुछ वर्षों तक 'सेल्फ इम्प्लायड वूमेन कमीशन' की सदस्य रही हैं। अप्रैल 2008 में इन्हें पीटीआई (PTI) की बोर्ड सदस्य बनाया गया। इनके उपन्यासों में 'रास्तों पर भटकते हुए' (2000) तथा 'पटरंग पुराण' (1983) बहुत चर्चित हैं।

(10) **नासिरा शर्मा** (जन्म 1948) प्रगतिशील मानवधर्मी लेखिका हैं। काल, धर्म, जाति, सम्प्रदाय के भेदों से ऊपर उठकर एक दिल और एक दिमाग वाले इन्सान के दुख-दर्द, उत्थान-पतन को आकार देने वाली लेखिका हैं। 'सात नदियाँ - एक समुन्दर' (1984), 'शाल्मली' (1987), 'ठीकरे की मँगनी' (1989), 'ज़िन्दा मुहावरे' (1993) 'अक्षय वट' (2003)। 'सात नदियाँ - एक समुन्दर' में आज के ईरान की कथा है। धर्म और सम्प्रदाय की राजनीति द्वारा घोला गया जहर और उसके गम्भीर परिणाम - घर्म की राजनीति द्वारा मानव मन को दूषित किया जाना - देश के बँटवारे से जन्मी त्रासदी आदि ही नासिरा शर्मा के अपन्यासों के मूल विषय हैं।

(11) **गीतांजलि श्री** का जन्म (मैनपुरी, उत्तरप्रदेश 1957) में हुआ। गीतांजलि श्री हिन्दी की सुपरिचित कथाकार हैं। "हंस" में प्रकाशित अपनी पहली कहानी बेल-पत्र (१९८७) से अब तक वे अपनी विशेष लेखन-शैली के लिये जानी जाती हैं। इनके उपन्यास "माई" (1993) ने इन्हें साहित्यिक क्षेत्र में एक मुकाम दिलाया। इस उपन्यास का अंग्रेजी के अलावा फ़्रांसीसी आदि विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इसके अलावा 'हमारा शहर उस बरस' (1998), 'तिरोहित' (2001) उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हैं। 'तिरोहित' (2001) हिन्दी में स्त्री समलैंगिकता पर लिखा गया पहला उपन्यास है। एक कस्बे में एक छत के नीचे दो जवान लड़कियाँ रहती हैं। 'बच्चो' घर की मालकिन है। ललना उसके आश्रय में है। दोनों में प्रेम है जो शारीरिक बन जाता है। हिन्दी-साहित्य में गीतांजलि श्री का अपना विशेष स्थान है।

(12) **अलका सरावगी** (कोलकाता 1960) को हिन्दी साहित्य जगत में एक विशिष्ट पहचान मिली है। अलका सरावगी ने 'रघुवीर सहाय के कृतित्व' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि हासिल की। अलका जी का पहला कहानी संग्रह वर्ष 1996 में 'कहानियों की तलाश में' आया। इसके दो साल बाद ही उनका पहला उपन्यास 'कलि कथा - वाया बाईपास' (1998) शीर्षक से प्रकाशित हुआ। 'काली कथा, वाया बायपास' में नायक किशोर बाबू और उनके परिवार की चार पीढ़ियों की सुदूर रेगिस्तानी प्रदेश राजस्थान से पूर्वी प्रदेश बंगाल की ओर पलायन, उससे जुड़ी उम्मीद एवं पीड़ा की कहानी कही गई है।